

मासिक अपराध समीक्षा को तैयार करते समय उसमें सुधार करने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान आकृष्ट करने की जरूरत है:-

§क§ अपराध जिलों के अपराध समीक्षा में अपराध बढ़ने/घटने के प्रतिगत मात्र/की रत्नेय रहता है लेकिन उसमें अपराध बढ़ने/घटने के कारण का रत्नेय नही रहता है।

§ख§ अपराध प्रवृत्ति का विश्लेषण नहीं होने के कारण अपराध में कमी वृद्धि आंकड़ा मात्र हो रह जाता है, और अपराध के रोक थाम के अभियान में तीव्रता नहीं आ पाती है।

§ग§ मासिक अपराध समीक्षा में जिला में विद्यमान अपराध स्थिति को विस्तृत समीक्षा नही रहता है। अपराध अनुसंधान विभाग के पास सम्पूर्ण राज्य का आंकड़ा संधारित है और उसे स्थिति का विस्तृत समीक्षा करना चाहिए।

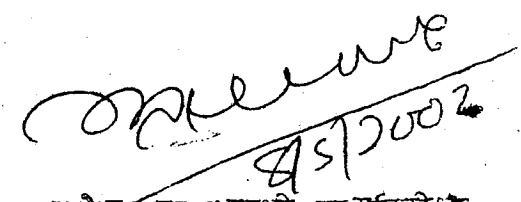
§घ§ सम्पति से संबंधित अपराधिक मामलों में जो गिरौह सम्मिलित रहते हैं, उसकी पहचान नहीं रहता है।

§च§ अन्तर जिला और अन्तर राज्यीय अपराधकर्मियों के गिरौह के तर्फी में कोई टिप्पणी नहीं रहता है।

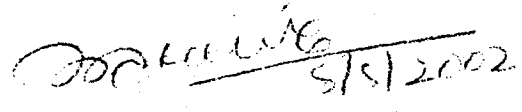
§छ§ मासिक अपराध समीक्षा एक नियमित दस्तावेज बन गया है, जिसमें एक ही तरह की भाषा का प्रयोग किया जाता है, जबकि उसे राज्य में व्याप्त अपराध स्थिति का चमरी देने वाला दस्तावेज होना चाहिए।

§ज§ महत्वपूर्ण कांडों का सारांश सिर्फ प्रथम, सूचना प्रतिवेदन का निबोध होता है। इसमें यह रत्नेय नही रहता है कि अनुसंधान के दोसान कौन-कौन सी कार्रवाई की गयी है।

§झ§ महत्वपूर्ण कांडों के अनुसंधान का अनुसंधान में रत्नेय रत्नेय करना चाहिए।


5/5/2002

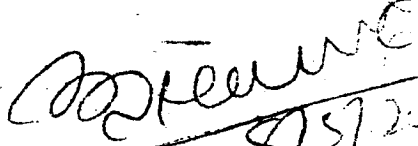
महानदेशक सह आरक्षी महानिरीक्षक,
बिहार, पटना।


5/5/2002

क्रमांक 2095 / पी-1
4-9-22-02

अपराध अनुसंधान विभाग, बिहार,
पटना, दिनांक- 10/5/20

- प्रतिनिधि:- १। अपर महा निदेशक, अपराध अनुसंधान विभाग, बिहार, पटना को कृपया राज्य के प्रांतिक अपराध समीक्षा उपरोक्त बिन्दुओं को सम्मिलित किया जाय एवं सभी संबंधित को भेजा जाय ।
2. सभी प्रक्षेत्रीय अपर महा निदेशक, {रेलवे सहित} प्रक्षेत्रीय महा निदेशक दखंगा को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ ।
3. सभी क्षेत्रीय उप-महा निरीक्षक {रेलवे सहित} को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ/सभी आरक्षी अधीक्षक {रेलवे सहित} को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ ।


महा निदेशक सह आरक्षी महा निदेशक
बिहार, पटना ।

76